DR. SUMAN LAL RAY
Guest Assistant Professor
Deptt. of Sanskrit
SRAP College, Bara Chakia
BRABU - Muzaffarpur

B.A. (Hons.) Part — I (Sem 1+2)
Subject — SANSKRIT
Paper — II

पृष्ठ सं.— 1
15×3 = 45 Marks
Dated - 17.07.2020

आलोचनात्मक प्रश्न (मेघदूतम् - पूर्वमेघ से)

1. मेघदूत के आधार पर उज्जयिनी नगरी (विशाला) का वर्णन करें।

कौन ऐसा संस्कृतज्ञ होगा जिसने महाकवि कालिदास का नाम न सुना होः इनकी कीर्ति - कौमुदी भारतवासियों के मानस में ही आनन्द की लहरी नहीं उठाती बल्कि पश्चिमी जगत के तप्त हृदयों को भी अपनी सरलता एवं आध्यात्मिकता से तृप्त करती है। कालिदास सरस्वती की उज्ज्वल मणिमाला के सुमेरु हैं। नाट्यकला की सुन्दरता निरखिये, महाकाव्य की सरस छटा देखिए अथवा गीतिकाव्य के हृदयाकर्षक पदों को पढ़िये, कालिदास में वह आश्चर्यजनक चमत्कार है जो विश्व को चकाचौंध कर रहा है। उनकी कविता में स्वाभाविकता, सरसता एवं आध्यात्मिकता का अपूर्व मिलन है।

'मेघदूत' महाकवि कालिदास प्रणीत एक गीतिकाव्य है। इसे दूतकाव्य भी कहा जाता है। इसमें एक यक्ष अपने कर्तव्यपालन में प्रमाद करने के कारण अपने स्वामी धनपति कुबेर के द्वारा शापित होकर एक वर्ष के लिए निर्वासित है। वह रामगिरि पर्वत पर रह रहा है। आषाढ़ महीने में आकाश में काले - काले बादलों को देखकर अपनी प्रियतमा के वियोग से संतप्त वह अपने - आप को सम्भाल नहीं पाता है। उसकी विरह - वेदना तीव्र हो उठती है और वह अचेतन मेघ के द्वारा अपनी प्रियतमा के पास प्रेम - सिक्त संदेश भेजता है। वह मेघ को अलकापुरी जाने के लिए मार्ग बतलाता है। मार्ग वर्णन के क्रम में ही रास्ते में पड़नेवाली उज्जयिनी नगरी का बड़ा ही मनोरम चित्र उपस्थित करता है।

उज्जयिनी नगरी (विशाला) की महत्ता बताते हुए यक्ष मेघ से कहता है कि — हे मित्र! यद्यपि उत्तर की ओर प्रस्थान किये हुए आपका मार्ग टेढ़ा हो जायेगा, तो भी उज्जयिनी के विशाल महलों और रमणियों के कुटिल कटाक्षों को देखने से यदि तुम वंचित रहे तो तुम्हारा जीवन ही निष्फल है —

'वक्रः पन्था यदपि भवतः प्रस्थितस्योत्तराशां
सौधोत्सङ्गप्रणयविमुखो मा स्म भूरुज्जयिन्याः।
विद्युद्दामस्फुरितचकितैस्तत्र पौराङ्गनानां
लोलापाङ्गैर्यदि न रमसे लोचनैर्वञ्चितोऽसि॥ (1/27)

P.T.O.

आगे यक्ष कहता है कि उज्जयिनी में उदयन की कथा के जानकार बहुत सारे लोग हैं। धनसम्पत्ति से समृद्ध एवं विशाल वह नगरी देवताओं के बचे-खुचे पुण्यों के द्वारा धरती पर लाया गया स्वर्ग का टुकड़ा हो, ऐसा प्रतीत होता है।

महाकवि कालिदास ने उज्जयिनी के प्राकृतिक सौन्दर्य का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया है। उज्जयिनी का समस्त प्राकृतिक चित्रण कवि ने विरह-वेदना-सन्तप्त यक्ष के माध्यम से ही किया है। यक्ष मेघ से पुनः कहता है कि — 'उस उज्जयिनी में प्रातःकाल सारसों के स्पष्ट मधुर कूजन को बढ़ाता हुआ, खिले हुए कमलों की सुगन्ध के सम्पर्क से सुगन्धित और अंगों को सुख देनेवाला शिप्रा नदी का पवन मनुहार करने में चाटुकार प्रियतम के समान स्त्रियों की रतिक्रीड़ा की थकावट को दूर करता है—

'दीर्घीकुर्वन् पटु मदकलं कूजितं सारसानां
प्रत्यूषेषु स्फुटितकमलामोदमैत्रीकषायः।
यत्र स्त्रीणां हरति सुरतग्लानिमङ्गानुकूलः
शिप्रावातः प्रियतम इव प्रार्थनाचाटुकारः ॥' (1/31)

महाकवि ने उज्जयिनी (विशाला) की व्यापारिक समृद्धि को भी स्पष्टतया प्रस्तुत किया है। उज्जयिनी केवल मनोहर ही नहीं बल्कि व्यापारिक दृष्टि से भी समृद्ध है। यक्ष कहता है कि — 'वहाँ करोड़ों की संख्या में बाजारों में फैलाए गये विशुद्ध एवं बहुमूल्य मध्यमणि वाले हारों, शंखों और सीपियों को घास के समान हरे रंगवाली तथा फूटती किरणों के अंकुरों वाली मरकतमणियों और प्रबालों के टुकड़ों को देखकर समुद्र मात्र जलवाले दीखते हैं।' प्राचीन कहानी को दोहराते हुए यक्ष पुनः कहता है कि — 'उज्जयिनी में वत्स नरेश उदयन ने प्रद्योत की प्रिय पुत्री वासवदत्ता का अपहरण किया था। यहीं उसी राजा का सुवर्णमय तालवृक्षों का वन था, यहीं नलगिरि नामक हाथी मद के कारण खम्भे को उखाड़कर इधर-उधर घूमता फिरा था। इस प्रकार वहाँ पुरानी कथाओं के जानकार लोग आगन्तुक बन्धुओं का मनोरंजन करते हैं।

वीरता के क्षेत्र में भी उज्जयिनी अत्यन्त समृद्ध है। वहाँ के घोड़े काफी तेज दौड़नेवाले होते हैं। हाथी पर्वतों के समान ऊँचे तथा मदवर्षा करनेवाले हैं। श्रेष्ठ योद्धा लोग युद्ध में रावण के सामने खड़े हो चुकने के कारण चन्द्रहास के घावों के चिह्नों द्वारा आभूषणों की इच्छा त्यागे हुए रहते हैं। वहाँ की स्त्रियाँ बालों को सुवासित करने के लिए धूप आदि को जलाती हैं। वहाँ महलों के ऊपर मोर नाचा करते हैं। फूलों से सुगन्धित तथा सुन्दर स्त्रियों के लाक्षारस से

R

P.T.O.